

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

१६ (६३५)

ग्रंथ नाम

शायन आरती

विषय

आरत्या

॥ बाव्या मुधाये उनि प्रहु ज सुंदरी ॥ अर
॥ सा घे उ निकरी अत्ता शानारी ॥ राम सुं
॥ दरारामा व्याचरण कमळी ॥ वो वा कु अर
॥ ती कनक गंगा की ॥ १ ॥ च व धी क्षण ति
॥ सु मन च ला श्री हारी ॥ क्षणे ये क विश्र
॥ ती द्या वो अरारी ॥ २ ॥
॥ सकळा सीता बुल सकळा पुष्य माळ
॥ भक्ता वा सो लका पर भीष्मा ॥ स्यामी चा
॥ लावे नीज मं वर ॥ स्व सज्ज सीर घु
॥ लीरा ॥ १ ॥ भक्त जन वा क के ब्रं ह्रा उ ना
॥ एक जे र घु टिक क ली वी ती दा सा ॥ २ ॥
॥ जाला वा उ रा ती ॥ अ हो जी र घु प ती ॥ मा
॥ र्ग सो ॥ उ वी ती बं दी जन मा ॥ ३ ॥ उ ट ले ज
॥ ग जी व न ॥ स व्हा स ना व र न ॥ वे पी लीं
॥ वे लो ण वो वा की ॥ ४ ॥
॥ पा व ला प्र स द अ तारा मा नी जा वे ॥ अ
॥ पु ल्हे ले स्त्र म करु ये का ची भा वे ॥ ५ ॥
॥ अ ता स्या भी सु रे वे नी द्रा क रा गो पा ला
॥ पु र लो म नो र थु जा वे अ पु ल्हा स्य च

(२)

॥ तुष्टारणी श्रीजागवीले श्रीपु
॥ लयावाडा ॥ शुभाशुभकर्मदोष
गहारायापीडा ॥ २ ॥ तुकाप्रणेदी
॥ धलेउचीवाचेभोजन ॥ नाहीनी
॥ वडीले श्री श्रीपुल्ल्या ११११ ॥ २ ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com